DR.MALA KUMARI

ASSISTANT PROFESSOR (GUEST

TEACHER)

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-1 ,UNIT-10,

THINKING AND IMAGINATION

LECTURE-92

चिंतन में भाषा का महत्व

ROLE OF LANGUAGE IN THINKING

मनोवैज्ञानिकों का एक दूसरा समूह ऐसा भी है जिसने उपर्युक्त विचार के ठीक विपरीत विचार व्यक्त किया है |इसमें पियाजे (1923) तथा क्लार्क (1973) का नाम अधिक प्रसिद्ध है |इन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि चिन्तन की प्रक्रिया व्यक्ति में पहले होती है और बाद में उससे संबंधित शब्दों का विकास होता है | दुसरे शब्दों में चिन्तन की प्रकिया के लिए भाषा आवश्यक नहीं है क्योकि चिन्तन पहले होता है और भाषा का प्रयोग बाद में | इस तरह से चिन्तन की प्रक्रिया भाषा द्वारा प्रतिबिम्बित होती है न कि निर्धारित होती है |पियाजे ने अपने प्रयोग में पाया की कुछ शब्द जैसे बड़ा, छोटा ,लम्बा ,दूर आदि का अर्थ बच्चा तबतक नहीं समझता है

जबतक उसमें इन शब्दों से संबंधित तार्किक संप्रत्ययों का विकास नहीं होता है |पियाजे के अनुसार बच्चों में चिन्तन करने का तरीका में पहले परिवर्तन होता है और इसके बाद इस परिवर्तित चिन्तन एवं विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए उनके भाषा में परिवर्तन होता है |पियाजे ने इस बात पर भी बल डाला है कि छोटे –छोटे बच्चे अपने चिन्तन को अभिव्यक्त करने के लिए न कि एक व्यस्क के समान इससे कुछ संचारित करने के लिए भाषा का उपयोग करते है | भाषा के इस तरह के उपयोग को उन्होंने आत्मकेन्द्रित भाषा कहा है |पियाजे (1968) का मत है कि छोटे –छोटे बच्चे अन्य लोगों जैसे माता –पिता की उपस्थिति में जो भाषा का उपयोग करते है ,उनके माध्यम से वे अपने चिन्तन एवं मनोभावों की सिर्फ अभिव्यक्ति करता है न कि उनसे कुछ संचारित करता है |पियाजो का मत है कि उनसे कुछ संचारित करता है |पियाजे का मत है कि बच्चो का यह आत्मकेन्द्रित भाषा विशेष विकासात्मक अवस्था से संबंधित होता है जहाँ वे यह नहीं समझते है कि अन्य लोग का विचार उनसे भिन्न है |जैसे –जैसे बच्चे की आयु बढती जाती है ,वे अन्य लोगो के विचार एवं भावों को समझकर फिर उनके प्रति संचारित करते है और वे यह समझाने लगते है कि उनके विचार से भिन्न विचार अन्य लोगों का है ,तब आत्मकेन्द्रित भाषा समाप्त हो जाता है| कई तरह के अध्ययन से यह पता चला है कि कुछ बच्चे ऐसे होते है जिनमें भाषाई कौशल अन्य दुसरे तरह की क्षमताओं से भी काफी विकसित था | यामाड़ा (1990) ने 'लाऊरा' नाम के एक बच्ची का अध्ययन किया जिसमें उन्होंने भाषा तथा अन्य संज्ञानात्मक क्षमताओं के बिच संबंध का अध्ययन किया |इस बच्ची पर कई तरह के संज्ञानात्मक क्षमताओं एवं भाषाई क्षमता के परिक्षण क्रियान्वयन किये गए |इस बच्ची की संज्ञानात्मक क्षमता जैसे बुद्धिलब्धि मात्र 41 था परन्तु इसकी भाषाई क्षमता काफी

विकसित थी और वह जटिल वाक्यों को बोलने में सक्षम थी |इस तरह के परिणाम के आधार पर यामाड़ा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भाषा एवं संज्ञानात्मक क्षमता जिसमें चिन्तन भी सम्मिलित होता है स्वतंत्र रूप से विकसित होते है न कि भाषा चिन्तन पर आधृत होता है |

(3) कुछ मनोवैज्ञानिक ऐसे भी है जो इन दो विपरीत विचारों के बीचों –बीच अपना बिचार रखते है |ऐसे मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि भाषा तथा चिन्तन दो ऐसी प्रक्रियाएँ है जो प्रारम्भ में अलग –अलग तथा स्वतंत्र रूप से विकसित होती है |किसी एक का विकास दुसरे द्वारा प्रभावित नहीं होता है |रुसी मनोवैज्ञानिक वाइगोस्ट स्काई (1962) का ऐसा ही विचार है |इनके अनुसार दो साल तक की अवस्था में चिन्तन तथा भाषा का विकास बिना एक –दुसरे को प्रभावित किये हुए होता है |परन्तु उसके बाद चिन्तन की अभिव्यक्ति शब्दों में होने लगती है तथा बच्चे शब्दों का प्रयोग भी विवेकी ढंग से करने लगते है |वाइगोस्ट कार्ड ने इसे इस तथ्य का संकेत माना कि भाषा एवं चिन्तन अब इस बिंदु पर एक दुसरे पर अंतनिर्भर होने लगे है |इनके अनुसार भाषा अब बच्चों के लिए दो भिन्न कार्य करता है –

(i)बच्चे आंतरिक रूप से अब भाषा का उपयोग समस्या समाधान तथा चिन्तन करने के लिए करते है |

(ii)बच्चे अब भाषा का उपयोग सामाजिक अंतक्रिया तथा अन्य लोगों के साथ संचार स्थापित करने के लिए बाध्य रूप से करने लगते है |अतः स्पष्ट है कि भाषा द्वारा चिन्तन की प्रक्रिया प्रभावित अथवा निर्धारित होती है |